5. निम्नलिखित पद्यावतरणों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिएः4+4=8

(स) जब मैंने सखियों को बताया कि
गाँव की सीमा पर
छितवन की छाँव में खड़े होकर
ममता से मैंने अपने वक्ष में
उस छौने का ठण्ढा माथा दुबकाकर
अपने आंचल में उसके घने घुँघराले बाल पोंछ दिये
तो मेरे उस सहज उद्‌गार पर
सखियाँ क्यों कुटिलता से मुसकाने लगीं
यह मैं आज तक नहीं समझ पायी!

(द) ऐसे किसी अनागत पथ का
पावन माध्यम भर है
मेरी आकुल प्रतिभा
अर्पित रसना
गैरिक वसना
मेरी वाणी
जल-सी निर्मल
हिम सी उज्जवल
नवल, स्नात
हिम धवल
ऋजु, तरल
मेरी वाणी।

इकाई - तीन

6. अज्ञेय की काव्यगत विशेषताओं की सोदाहरण विवेचना कीजिए।7

7. ''नागार्जुन सच्चे अर्थों में स्वाधीन भारत के जन प्रतिनिधि कवि हैं'' उदाहरणसहित विश्लेषित कीजिए। 7

इकाई - चार

8. भवानी प्रसाद मिश्र की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 7

9. ''मुक्तिबोध भयावहता और संघर्षों के कवि हैं'' इस कथन की पुष्टि कीजिए। 7

A **(Printed Pages 4)**

Roll No. _____

A-197

बी. ए. (भाग-3) परीक्षा, 2015

(रेगुलर)

हिन्दी

प्रथम प्रश्न-पत्र

(अद्यतन हिन्दी काव्य)

समय : तीन घण्टे **पूर्णांक : 50**

निर्देश : कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। इनमें से **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** है। इसके अतिरिक्त चार इकाइयों में से प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित प्रश्नों में लघु उत्तर दीजिये : 2×10=20

(क) तारसप्तक के चार कवियों के नाम लिखिए।
(ख) अज्ञेय के काव्य की दो काव्यगत विशेषताएँ बताइए।
(ग) प्रगतिवाद और प्रयोगवाद में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
(घ) नरेश मेहता की दो काव्यकृतियों के नाम बताइये।
(ङ) 'कालिदास' कविता का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।
(च) 'गीतफरोश' कविता का आशय स्पष्ट कीजिए।
(छ) 'ब्रह्मराक्षस' कविता का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।
(ज) धर्मवीर भारती की दो काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।
(झ) 'भूल गलती' कविता का मूलभाव स्पष्ट कीजिए।
(ञ) अज्ञेय की दो काव्यकृतियों के नाम लिखिए।

इकाई - एक

2. निम्नलिखित पद्यावतरणों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिएः

(क) नदी जिसमें खो गयी कृश-धार। 4+4=8
किन्तु जब-जब जहाँ भी जिसने कुरेदा
नमी पायी : और खोदा
हुआ रस-संचार
रिसता हुआ गड्ढा भर गया
यों अजाना पांथ
जो भी क्लान्त आया, रूका लेकर आस,
स्वल्पायास से ही शान्त
अपनी प्यास
इसी से कर गया :
खींच लम्बी साँस
पार उतर गया।

(ख) आबद्ध हूँ, जी हाँ, आबद्ध हूँ -
स्वजन-परिजन के प्यार की डोर में -
प्रियजन की पलकों की कोर में -
सपनीली रातों के भोर में -
बहुरूपा कल्पना के आलिंगन-पाश में -
तीसरी-चौथी पीढ़ियों के दंतुरित शिशु-सुलभ हास में -
लाख-लाख मुखड़ों के तरूण हुलास में -
आबद्ध हूँ, जी हाँ, शतधा आबद्ध हूँ।

3. निम्नलिखित पद्यावतरणों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिएः4+4=8

(ग) मेरी भावनाओं में तुम्हारा मुखकमल
कृश म्लान हारा सा
(कि मैं हूँ वह मौन दर्पण में तुम्हारे कहीं?)
वासना डूबी शिथिल पल में
स्नेह काजल में
लिये अद्भुत रूप-कोमलता
अब गिरा अब गिरा वह अटका हुआ आँसू
सान्ध्य तारक-सा अतल में।

(घ) बनूँ मैं सज्जन, सुशील विनीत
हार को समझा करूँ मैं जीत
क्रोध का अक्रोध से कर अन्त
बनूँ मैं आदर्श मानव सन्त
रह न जाये उष्णता कुछ रक्त में अवशिष्ट
गुरूजनों को भी यही था इष्ट
सड़ गई है आँत पर दिखाये जा रहे हैं दाँत

इकाई - दो

4. निम्नलिखित पद्यावतरणों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :4+4=8

(अ) उसने सच्ची आवाजों को हर समय उड़ाया है मजाक
उसने हर चमक रहे सूरज पर फेंकी है हर वक्त खाक
यदि कोई उससे कहे कि तू गलती पर है
तो उसको ऐसी बात पसन्द नहीं आती वह बात उसे गड़ जाती है
इस दुनिया का ऐसा स्वभाव वह हर कमजोरी पर अड़ जाती है
पर आज हमेशा से ज्यादा अटपटा साज दुनिया का है
है कामकाज अनजानों के और रूप बड़े गुनिया का है
वह अपनी गलती को कुछ ऐसे स्वर में सही बताती है।

(ब) सम्पूर्ण मानवता के विरूद्ध
सबसे बड़ा संघबद्ध षड्यन्त्र सिद्ध हो।
राज्य के - अकूत शक्ति सम्पन्न होने का अर्थ ही है
व्यक्ति का स्वत्त्वहीन होना।
राज्य की गरिमा को
व्यक्ति की गरिमा का पर्याय होने दो
किसी भी व्यवस्था का
व्यक्ति से बड़े हो जाने का अर्थ होगा
अमानवीय तन्त्र!!